

मराठी

१ गोपीगिरी

२ राधा विलास

३ गोडोद्युमोह

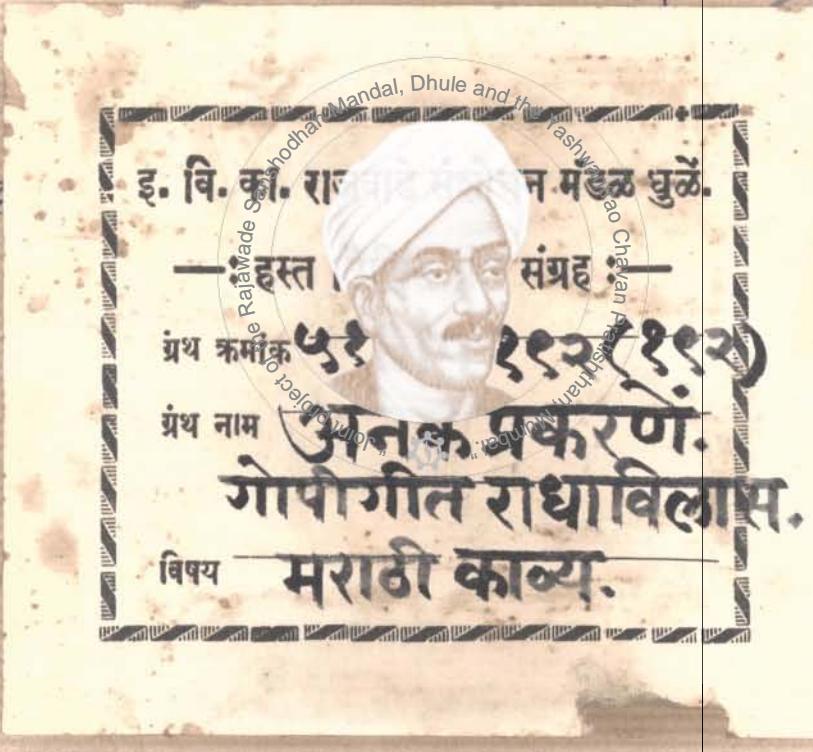
वामनकृत

कांप

७ वाळकृती

वामन

वामना



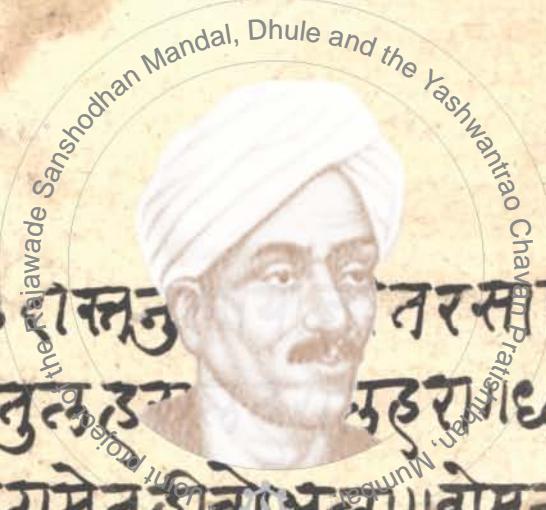
(1)

रव्याल रवमास

।अबकौसिअइवोब्रिजमोपाति॥२॥ पातिसुनत
।मेरीछालिलरकगई॥गोपिकानेहानदृष्टिहसव
।चइरे॥ब्रिजमोपाति॥३॥

कानउ

।महबुबयारकुहेवणहेर॥४॥



Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavat Pratishthan, Mumbai, India

॥पोण्यानंडिरास्तुनु
॥वारीयवेनुत्तुडा
॥हीवारीजगमेनुहीवोभलगा॥वोमनुकादामनुकादा

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

(पढ़)

॥वंदुदेवगजाननरे॥६॥जात्तास्मरणेहरलीला
॥वीमपुर्णद्याघनरे॥७॥सवरिंझीझाधीजावे
॥करीतीलपुजनरे॥८॥जालाभ्यातासुखसप॥
॥जालागोसावीनंदनरे॥९॥वंदुदेवगजाननरे



(3)

गौडकल्याण

। अजब बहरा ॥ बनि है फुलों दि राहणि मे गुल
 । राहनि फुलि बेल अजब ॥ ४ ॥ गुलाब सेवति
 । जाइ जुइ सब रैये छाये रंग सुरंग मिलावे ॥

। सोये रीये कोन कोधोटा सावरे सलोने निकि
 । गात ॥ ५ ॥ चंदन किरब्बा रलिये मोंक भाल
 । ही सोहन मंद मंद मुग्गन नाह ॥ तान सेन मि
 । यातु मबहु नायक ॥ लता तोतरा त ॥

। ननदल बरजा कौं- २ ॥ रोपिया चलनि पर
 । हेशन ननदल ॥ ६ ॥ ऊतमा उलाल कवाडि सो
 । नउठिराधि कातुट चुट चुट किलेत ननदल ॥

गौडसारंगध्यं

जो गिरीधर माय मुरलि मय जो पाउ तुरिया स
 । हितरथ बिरमा उ ॥ ७ ॥ तुम बस करि सकल बि
 । द्वाबन हु बस कारु त्रसु तुम तेरी ज्ञाउ जो ॥ ८ ॥
 । सरहास प्रभु मन कि इछा किरपा करते रे दर स
 । पाउ जो गिरधर ॥ ९ ॥

(४)

अथगोपिगितप्रारंभः

श्रीगणेशायनमः ॥ कुलदेवतायनमः ॥ कालि
 हीनुनिकालियादविलाहाकं दर्पनारायणः ॥ गो
 पीचेस्तनशैलद्वार्गरचुनिरक्षुनियाच्चापणा ॥ पुडा
 इकारितोबुहुहरिहरीत्यात्मजगङ्गधूषणा ॥ १ ॥ कालिं
 दिवे अमव्यज्यज्येनाशिलेकालियाने ॥ तैशिगोपि
 हस्यसदनेयासमोहष्याने ॥ यजैशारगुडुनिफ
 णादुडिलेत्याभुजगा
 नीयां अंगेना ॥ २ ॥
 निइद्विरावासवस्थ
 वीरहदुःखिलागपि
 ष्वभुषणा ॥ त्रियम्
 तुतेगोपकामिनी ॥ तुजकुरीहरिप्राणठेउनि ॥ ४ ॥ क
 मलगभिचैश्रीजसेहरीभकरिकृपातयादृष्टिनेह
 शी ॥ सुरथनाथनुभोगदायका ॥ दाशिगोपीकालुसि
 या ॥ वरहिदेउनिआसलाउनि ॥ सकुल्या
 याकुका ॥ ५ ॥ वरहिदेउनिआसलाउनि ॥ त
 आडामाजिघालुनि ॥ नदुपरीहरिद्वेरकापणे ॥ त
 रीमृतासहिकायमारणे ॥ ६ ॥ विगतदर्पतोसर्पका
 लीया ॥ करुनिरक्षिलेगोकुलसिया ॥ विषज्याति
 यानाशुनिभया ॥ विरहसागरीघातलंत्रिया ॥ ७ ॥



रसमुकुरपदलक्ष्मर्दु
 तुनंहयुकुलि ॥ मुणु
 गहिसुखियावजेहरी
 ॥ यगदहावेकुउनिवि
 ष्वभुषणा ॥ हडकितो

तुतेगोपकामिनी ॥ तुजकुरीहरिप्राणठेउनि ॥ ४ ॥ क
 मलगभिचैश्रीजसेहरीभकरिकृपातयादृष्टिनेह
 शी ॥ सुरथनाथनुभोगदायका ॥ दाशिगोपीकालुसि
 या ॥ वरहिदेउनिआसलाउनि ॥ सकुल्या
 याकुका ॥ ५ ॥ वरहिदेउनिआसलाउनि ॥ त
 आडामाजिघालुनि ॥ नदुपरीहरिद्वेरकापणे ॥ त
 रीमृतासहिकायमारणे ॥ ६ ॥ विगतदर्पतोसर्पका
 लीया ॥ करुनिरक्षिलेगोकुलसिया ॥ विषज्याति
 यानाशुनिभया ॥ विरहसागरीघातलंत्रिया ॥ ७ ॥



ब्रजगित्तमहेत्याभगासुरा ॥ अजगरासकारू
प्यसागरा ॥ वधुनिरक्षिलेत्यालुलगहरी ॥ ब्रजवधु
वरीकोपकापरी ॥ ७॥ प्रव्यत्यमेघहि वर्षतावरि ॥ गि
रीधरनियारक्षिलेहरी ॥ प्रव्यत्यतोस्वयेत्यावरीक
री ॥ कठिणस्तिवेहआजिकापरी ॥ ८॥ पिउनिअग्नि
तुज्यासिरक्षिसि ॥ विरहअग्निनेआजिजात्सि ॥ ह
स्तुनिसर्वेहआमुचेमयें ॥ वीरहसंकटीघालिसि स्वय
नद्दसिंगोपिकापुत्रनिश्चये ॥ सकलजंतरिसार्थि
तुस्वये ॥ यद्दुकुविक्षिप्तानामिसे ॥ भुवनतारी
सियाकथारम्भे ॥ ९॥
फच्छआमुचिद्याए
। द्यि ॥ असयदेउ
। सिहिदुरजोकरी ॥ न
। स्ततोआमुचेसिरी ॥ कैराजनकुण्ठपितुहरि ॥ १०॥ प्रग
। दत्तारमाक्षीरसागरिं धरितिविचाहस्तजाकरी ॥ अ
। सयहस्ततोमस्तकावरि ॥ निविकेउनिगोपिसुंहरी ॥ ११॥
। ब्रजजनानीयादुःखनाषकावदनदाखविगोपना
। यका ॥ बटकीजापुल्याजाशकिकंती ॥ हद्दियेव ॥
। ढाकोपकाकरी ॥ १२॥ सहजदाउनिजावहांससि ॥
। तरितुंजामुचागर्वनाद्विशीरी ॥ नखनलागतांछे
। दिजेजया ॥ हरिकुरुउकांहारानेतया ॥ १३॥ अ ॥

ं सुमरी ग्रजोवंदने हरि ॥ कमठ जाव से जान सु ॥
॥ हरि ॥ तृण चरा सवं हौठ तावनी ॥ चरण ठेवितो छा
॥ मुचे जनी ॥ १६ ॥ निज लुखां प्रतालुध हौउनी ॥ जा
॥ मरज्या मधे सिंघुने दिनी ॥ पदस रोचते याकुचा ॥
॥ वरी ॥ कहनि पांदयाठ विगाहरी ॥ १७ ॥ रगुनि ॥
॥ कणकावयामणी ॥ दव उलास वाचा सिरोभणी ॥
मदन दुष्ट हाजा मुचे उरी ॥ पदत क्षेत सामृद्धि की ॥
॥ हरि ॥ १८ ॥ हरनी दपडे पहियाहरि ॥ दव कावी ॥
याप्यापी रुक्षी ॥ र
दरजा मुच्याकी मर्ति
ओ मुसी ॥ सुम मजे
ता ज्यास्वकी करी ॥
तुश्चिक धासुधा तापल्याजना ॥ नीव विअंत रिंवि ॥
चमूषणा ॥ आंस्रत निंदिति स्वर्गिन्ने मुनी ॥ तव क
थामंताव दिंजे जनी ॥ २१ ॥ जमत्रात वीस्वर्गि ॥
इरी ॥ तुसीक धासुधा बंध संहरी ॥ जमत जेपी ॥
तेखा चिपाशीरी ॥ चरण ठेउनि नेक धावरी ॥ २२ ॥
अंस्रत गोउ तोजोंजी मेवरि ॥ तुसीक धासदा गोउ ॥
डे हरी ॥ अवशि जान निबाल अंतंरी ॥ मधुर ॥



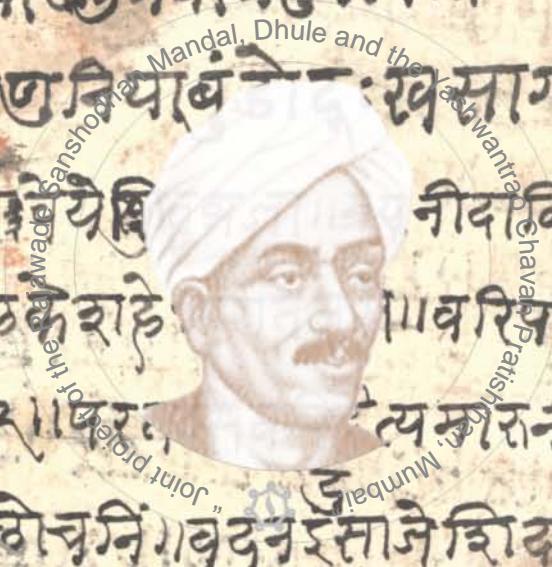
Rajendra Gannodha Mendal, Phule and the Renaissance
Joint Project of
Number
Digitized by srujanika@gmail.com

। सर्वदोंज परोपरी ॥२३॥ कनक जागि ते गुंजा ।
। जो खण्डे ॥ तसीकथा सुधा तुल्य लेखणे ॥ तुला ।
। न जे संहा सर्वहि स्थवी ॥ असंजत तु छतु देवता ॥
। कुछी ॥२४॥ त्रिभुवने शांतु सुकुलाजसी ॥ करिति ॥
। तुल्पता और निष्ठी ॥ अस्त्र लामही श्रीकथा ॥
। मत्वा ॥ वदति वेध हाजावत वता ॥२५॥ वस ॥
। तिल हमी दुश्मी येउरी ॥ तासि च मुकि ते श्रीक
। घे वरि ॥ बहुहुदा-
। प्रात्तकांदेत सद
। पित्रि धने ॥ परमद
। ह्मीकथा विश्वा-
। जनी ॥२६॥ विरह हेजरी जीव का ठिती ॥
। तुरीकथा स्त्रैं गोपि का जिती ॥ परहरि ॥
। तु ध्या संग तिवारे ॥ मरण तैं बरे काय है ॥
। निदालो ॥२७॥ सरस हस्तो प्रेम बोलतो ॥
। विहरणो चिदानंद लक्षणो करिति ग्रंतरि ॥
। ध्मान जे मुनी ॥ विसरति कशा गोपी का मनी ॥

“Joint Project of the
Rajawade Saneshodhan Mandal, Dhule and the
Yashwantrao Chavhan Sanskriti
Mandir, Mumbai”

(8)

॥२९॥ स्मर वितां स मे कां ति चे वनी ॥ बुद्ध ॥
 ॥ स्तो नि जे रा दी ले मनी ॥ करी ती आ मु चा ॥
 ॥ क्षोभ्स्त मान सी ॥ कपथ्या कस्ती गुल मान
 सि ॥ ३०॥ किर सि गो थं ने चारि ना बनि ॥ पद्धु
 से सदां आ दु अनी ॥ दुख वति लते खान् पांग
 कुरी ॥ अष्ट्रि धर्वं - खमागरि ॥ ३१॥
 दिव समाव्यये द्वि
 वं जा ॥ कुर छ केश हे
 डि दिसे ॥ ३२॥ पर
 थोर तु विरक्तो चुनि ॥ वदन इस्ता जे शिदाउनि ॥ मद
 न सो डिसि आ मु चे मनि ॥ ३३॥ पुरवि वंडने सव किस
 ना ॥ चरण तो तु सानं हन इना त्वरि लठेउनि आ मु
 चा कुनि ॥ पुरवी यह ढी आ स आ मु नी ॥ ३४॥
 सतत पूजि ला जो न तु मुख्ये ॥ वस ति ज्या मध्ये
 सव हि सुख्ये ॥ धरली ला आ लं कार या वनी ॥
 चरण ठवितो आ मु च स्ता नि ॥ ३५॥ धरनी संक



"Joint Project of the Sanskruti Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan Pataleshwar Mumbai"

। धींध्येयअंतरी ॥ स्मृतिंत्याचियाआपहरी ॥
 । त्वरितगोपिकांच्यापयोधरी ॥ चरणञ्चापुला
 । ठे वितोहरि ॥३६॥ सुरतवाढविशोकजोठरि ॥
 । त्वरितवेलुनेचुंडिविलाधरीं ॥ विसरविजनी
 । स्वरुक्ता ॥ त्वरितपाजींत्यात्याधरांमत्ता ॥३७
 (सुरसरत्पितृज्ञात्यानरी ॥ अधरतोतुसा
 । चुबितोहरि ॥ सुर-
 । मततेथिच्छदरः
 । रिखीतृणी ॥ द्विसः
 । पाहातांश्रीमुखा -
 । ति ॥३८॥ नयनीपाहाकुजमाधवा ॥ करितिपा
 । पण्डविष्टतेधवां ॥ करूनिजगुलीभंगतेधवा ॥ क
 । हुतनिंदितोपद्मसंभवा ॥४०॥ नपुरनीमुखापाह
 । ताधरी ॥ करितिपराविष्टपापिएरी ॥ कपट्टिपा
 । आशाज्याविलासिनी ॥ एजिलकोणहातुजवासु
 । नि ॥४१॥ पतिसुतान्वर्णिंदुवंधुनागसुजनीपात
 । लोंतुजआन्वता ॥ मुरलिच्चारवेंमोहलोमनी ॥ क

॥ पृष्ठिकोणसावृक्षियामीनी ॥ ४३ ॥ पुरुषसुचनाक ॥
 ॥ छतिऊमुते ॥ तरिनधावंतोकामिनीतुते ॥ का ॥
 ॥ निरासविश्वासधातका ॥ करूनि मारिल्लादासि ॥
 ॥ जोपीका ॥ ४४ ॥ वहनलेचनिपाहाताहरी ॥ अविविश ॥
 ॥ कताहेखताउरी ॥ उपजनिमनिकामकामता ॥ धरि ॥
 ॥ धुडिस्थृहावाटलेमना ॥ ४५ ॥ विविधशब्दयेकांतिचेव
 ॥ स्मा अवणियेकांतामद्वनुपजे ॥ तुजविणहरीय्राघ
 ॥ जानसे ॥ परिहापालबनाचनाभस ॥ ५० ॥ भूवनमंग
 ॥ क्वेमुक्तिजेकारी ॥ ब्र
 ॥ नीगोपयागेपसुंर
 ॥ चरणठेविवाकुर्क्षरा
 ॥ मिनि ॥ फीरशित्या
 ॥ रुत्तिरखडे ॥ ४६ ॥ सकंक्षभासगोपसुंदरि ॥ करिति
 ॥ गायनेयापरोपरी ॥ रुडलिसुस्त्वरेऽश्वलोचनि ॥ धर
 ॥ निलालसाहृष्टदर्शनि ॥ ४७ ॥ रुडलिलोआरिगमांजी
 ॥ येहरी ॥ अगटब्यापुलेरूपतोकरी ॥ महनमोहनश्री
 ॥ पविस्थये ॥ पुसवसेतयालागिविस्मये ॥ ४८ ॥ वसन
 ॥ पीवकेहारकंधरी ॥ नयनिहेखोनिगोपसुंदरी ॥ उठ
 ॥ लीयाजशाद्राण्डालिया ॥ सकच्छक्षित्यापेति
 ॥ इदिया ॥ ५० ॥ धरितिधाउनियेकत्याकरी ॥ धरी
 ॥ तियेकत्यापिलअंबरि ॥ भुजधरितियाएकञ्चंगरी



Portrait of the Rajawade Gao Shodhan Mandat, Dhule and the author of the manuscript.

किनिकत्यामिक्याधालितिपदी ॥५३॥ हरीपहिं
 यानित्यवामने ॥ त्रिभुवनिमिठिधातलिमने ॥ आ
 मनयामनेहृतिगोपिका ॥ सकालजालियाचित्सु
 खात्मिका ॥ ५२॥ इति श्रीमद्भामनहृतगोपी गित स
 मात्यः शुभं भवतु गश्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥१॥ ५

॥ श्रीगलेशामन
 ॥ राधावीत्तम् ॥

॥ करुनिनमगदेव
 ॥ चेंजेकलिल्लिहरिते
 ॥ प्रबंधें ॥ तुठिअल
 ॥ तें ॥ सुरसचरितना
 ॥ रितरथाछालिक
 ॥ नवमारकबंधे ॥ १ ॥
 ॥ कोलोयेकहिनिरभाजसरनितेराधिकासुंदरि
 ॥ प्रालिसुंदररूपपाहुनितिचाथायाबुहुघेतरि
 ॥ राहिनाजननिकउंवरिरेलोकेमहिमाधवा ॥ कां
 ॥ रेबाडुगलानसेरियकसीमंयोइधिकेशधवा ॥ २ ॥
 ॥ उचलिजननित्यातेंसर्वथातेनथारे ॥ निजनिकिरु
 ॥ विद्याविपांखरातेहिथारे ॥ शुकपिकआलिरांवे
 ॥ पारवेहंसनोरे ॥ ठरिमननरमेचित्तिनशाकेसमे

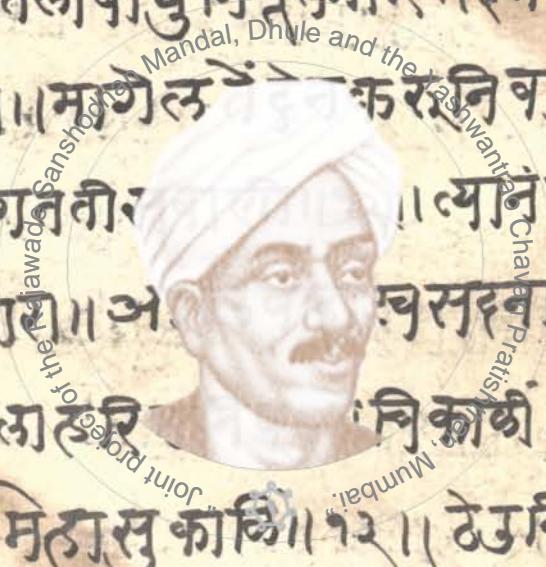
(72)

॥ रे ॥ ३ ॥ तें हि तया सिनरूचे बहु को धर्तवि ॥ तया चिआ
॥ गम्य करणी कवरो वहवि ॥ को धें करनि जननि मग
॥ त्यासि हापि ॥ रहेउ गाम्ल एतते नमने कदपि ॥ ४ ॥
॥ तना प्रथल जननि कि रिलावके ना ॥ कां आजि बाक
॥ चकला सहसरा करेना ॥ राधे प्रति बढ़त से मग नंदा
॥ ५ ॥ घेउ निशांत नकरि ल्याउ दारा ॥ ६ ॥ तेवे सीतो
॥ तोष विशेष जाग ॥ त्वेर करनि मग त्याअ जाला
॥ कुडे वरि घेत धर्स
॥ ७ ॥ अस्थिये
॥ यकरो उदारा मातें ब
॥ बांशी व बिलें पक्कने ॥ ८ ॥ लग्न गधा मातें उसि रबहु
॥ ब्राला चपकला ॥ त्वेरे धया बाबाई र मराधरि प्रेरे ल
॥ ककडा ॥ वरे से डे विहरि जननि अंकिं आलि निधे ॥
॥ रहे तो अको शें उच्छुनि कुडे ल्याननि धे ॥ ९ ॥ छष
॥ कारके रितो रुदन नारे अंत रिंधरि तो निनगते ॥
॥ मायुति जननि दे तिजपा सिं ॥ खेळ विंसु लात से
॥ गेवनया सि ॥ १० ॥ राधा मले बहु तये थउ सिर

(13)

॥ ज्ञाला ॥ वाटे सदि यसदनि निजकांत अग्ना ला ॥
॥ क्रोधैं करुन मन ता डिल तो न सोडि ॥ तेहा त्रीले
॥ सज्ज लिकाय तयां तगोडि ॥ १० ॥ घेउ नियां छषा
॥ ग्रहा सिजावें ॥ राधे पतीवें मय हेय जावें ॥ नेहा तु
॥ ला कांत वहेल रागें ॥ तेहांत याये थिल दत संगे
॥ ११ ॥ ऐसें तिल बोधु निपूत नारि ॥ देवी न पासीं मु
॥ गुपुत न री ॥ मागेल — कर निवारी ॥ माता
॥ असी सांग न तीर
॥ उनिया उहारा ॥ अ ॥

॥ व्यानं तरेत्वरित घे
॥ च सहवा प्रविगोपह
॥ चिक्कार्धी ॥ राधा हिते
॥ १२ ॥ ठेउ नि निज मंच
॥ पउली हष मिहा सुकाणि ॥ राधा उभी राहि ली ॥ नेत्री ते महना सि
॥ वरीठरि ॥ राधा उभी राहि ली ॥ नेत्री ते महना सि
॥ निंद तं प्रा सि मु तिबिरी पाहि लि ॥ तेहांते महनि
॥ हृक्ष पर महो होउ निया का मिनी ॥ मानी अंतरि
॥ रवे फळा युवत हेआ ली न हेया मिनी ॥ १३ ॥
॥ पुर्व हिंगणी काजा सो निमुचि नेहन दिका



Joint Project of the Sanshodhan Mandal, Dhule and the Rashwantrao Chavhan Pratisthan, Mumbai.

॥ देसि पाठा ॥ श्रीरंगी त्रिरीचित्तजपुनिसा ।
 ॥ दां कोले ब्रतां तेमठा ॥ श्वानाते करि छही ।
 ॥ कानुगवतां मित्राकरि पुजना ॥ ज्वाचेरू ।
 ॥ प्रमनात जाणित सदां नेण दुजायाजना ।
 ॥ बहुत दिन जासि तेजाचरे हो ब्रतातो ॥ परा ।
 ॥ मसद्य तेणो पाहि लेकामनातो ॥ हृषण उनिती ।
 ॥ सनो भिस्य गति तात ॥ ज्वामरु पुरितज
 ॥ लिङ्गेष्ट तेदेव ॥ श्रीरंगतिधीका ।
 ॥ रमज्जनातो ॥ शु
 ॥ धावि घन्ट्यहि ना ॥ सहस्र रेगाया ।
 ॥ करीत नाना ॥ १७७॥ कोण कोटि निब्रह्मदेव ॥
 ॥ सदनीते सुंदरी जदरो ॥ आलिगायन नन्दसु ।
 ॥ तेघ करि तावे गीजा सिसादरो ॥ रैकानि मगा
 ॥ तो इला निज मनि मागे सुगो तुवं रा ॥ तेकुं
 ॥ तो विनयेव देव रित देश्रीरंग रेशावरा ॥ १८८
 ॥ पूजन तं रेव दति तीज तिक्का सुदेव ॥ द्वापारा ।
 ॥ आंत सभं ईति ईवि सुदेव ॥ श्रीडेल ब्रह्मसा



Rajawade S. Shodhan Mandal, Dhule and the
 Shantoo Chavhan
 Prahis
 Murti
 Pafai
 १८८

॥ गदनीमुमुरूपनारी ॥ तोकिंरमेलतुजल
 ॥ प्रियपुतनारि ॥ १९६ ॥ वृत्तिवरआसातेला
 ॥ घलिहोसुसेकास्तदुपरिकषनुयोदि ॥
 ॥ तिचाकुसिला ॥ उपजलिमगाधानावटेज
 ॥ निला ॥ परमविनितहोतेपातलिश्रीपतिला ॥
 ॥ श्रीमहेदारखंडिमनितिवद्लासुतज्ञो ॥
 ॥ किमाठासा ॥ सच्चाए पाठावेचतुरनरा
 ॥ वरिकातिकाच
 हेमगजनिहो ॥
 ॥ च्चासासमेका ॥
 ॥ होजाणाकथा
 रूपासपाहे ॥ युवी
 रवितिवरिहोचपा
 ॥ हो ॥ २७१ ॥ यायाकाननवाळवपुहेरस
 ॥ जासेनिहरि ॥ तिचिसुदंरतेतनुनिरखुनि
 ॥ मानलातेहरि ॥ जिचेहपरतिसयेघनतुक
 ॥ दासिगभेमेनिका ॥ तिच्चावरणिहोपदाध
 ॥ जितुकातोसाम्यवणनिका ॥ २७२ ॥ अधर
 ॥ विद्मसाम्यकरेखिला ॥ दशनहिरसमो
 ॥ ठस्तिरेखिला ॥ परमजनुरहोउनिमाधव



"Portrait of Rishabhdevji, Sanshodhan Mandal, Dhule and Raigarh, Chhattisgarh, India"

१०

॥ सुरतच्यूं बनै सिरमाधं के ॥ २३ ॥ न किति
॥ च्यामुकिक हो सु तेज ॥ कै चेत सै दैयगुर
॥ स तेज ॥ देखु निरीतै भगदेव देव ॥ नामान
॥ क्रेष्टा कुछवा सु देव ॥ च्छा ज छिमि न तेसै च
॥ कि न नै चति च ॥ बरे शोभनि कजले हो स नीचे
॥ स्मर च च किं बाग लाभक माना ॥ हरि च्यामुनि
॥ मेदले सप्तमाना ॥ २४ ॥ क्रुचिचिज तिवर्तुलि दे
॥ खिले ग भगवदा न क
॥ ठात्त से हुलि ॥ कं
॥ जाला असे हुरि हि
॥ मविकुलयाप्रभा
॥ मुरारि ॥ मिलाधते बुदु उखाति छिजिभारि आसा
॥ ऐसि बधु हेग मनी उभारि ॥ हुभावजायुनि च के
॥ टभारि ॥ सवंति रिसाक्ष-असेहरि तो ॥ तेइ छि
॥ लीकाचतशा करि तो ॥ २५ ॥ पृस्परहु तुहि
॥ योकं जाला ॥ या कारणे कीं नटणे अज्यात
॥ यलो निजाला युव श्रीहरि तो ॥ ति चिस्चये
॥ क्षमव्ययाहरि तो ॥ २६ ॥ तो देखी लंगुरम



Digitized by Sanyodhan Mandal, Photo and the Yashwantrao Chavhan Sahasra Nimbarka

॥ को तु क सुंदरी ने ॥ हें दा विलें परम लाघव श्री
॥ ह रिने ॥ स ब्री उहोउ नि मनि स्ताव्य रहे ॥ त्याने
॥ तरें करि त माधव तो लवरहे ॥ ३०॥ तो मंत्र की
॥ धरी करि कर सुंदरी चाग ॥ साडी खेरें जरि हि आहर
॥ सुंदरी चा ॥ हे काय हो करी लसार विमध्य यामि ॥ जा
॥ वें जिवे पलि ग्रह अलियामि ॥ १॥ हे वाग तिनग
॥ रीचे न रभाणि नारी ॥ ये कालि चा सुरन सुंदर पुलनारी
॥ हे देख विनय मिलाव
॥ हास्य बुज्या सिनेर
॥ राहात ॥ दाकी ऊरे
॥ सहन द्वारा दिमो नये
॥ धयेते ॥ ३३॥ भरव
॥ विसरी सातये ॥ आरज्यालु नियां मग सुहरी ॥ त
॥ रीस धेउ नियेर निमं द्विरि ॥ ३४॥ त्यानं तरे खचित रह
॥ पलंग जैसे ॥ नाना विधी रवि विलास करी सतेजे ॥ तें
॥ निचेऽधर चुंबन धे हरी तो ॥ मर्दी कुचा सवसनास्त
॥ रेहरी तो ॥ ३५॥ कामालया मुन दिसां कुनियां कराने
॥ तो काढिला करकरे कमळ वराने ॥ त्यानं तरे सुरत
॥ र्यकरी हरी तो ॥ राधे चिया सकवृहनि जशा हरी तो
॥ त्रैमाज स ब्रज बधु सिहारी त सोने ॥



Portrait of a man, likely a representation of the deity mentioned in the text.

(४) शंभुशशितुक्षिपुष्पगमेवसाच ॥३७॥
॥ पोटिचतुर्दशहिमुवनजोधरीतो ॥ हजन्मलायदु
॥ कुल्यमणिहरीतो ॥ राधाआशसिस्त्रुत्याग्निधरी
॥ आसार्व ॥ ३७ ॥ हैतांबस्त्रियनिउरोजयुगांसनीच्या
॥ हंतक्षतेअणिनरेंसमईरतित्रा ॥ लागेनितप्रहृदै
॥ बुहफारजाली ॥ खांलिंहरीसमगतेस्त्रुत्यकेनिधाली
॥ ३८ ॥ कसाकृष्णताराधिकागोपदारा ॥ वहेश्रावतजाल
॥ तीयेथेउदारा ॥ ह्लणोनिम्यावैपरीतेंरमायें ॥ नलागेसर
॥ थेतुम्हालाश्रमावे ॥ ३९ ॥ तोलिसिंमतसेअनुरागे ॥
॥ धीकिसीनवेहआनुरा
॥ बनेतवसखिभाध
॥ गवराधा ॥ जालि
॥ जान्मायतोआघह
॥ चासगुणकायतो ॥ ली ॥ ४० ॥ जापुनिलम
॥ जनंदकुमारी ॥ तोनिमग्नवृषभानुकुमारी ॥ भा
॥ जलारसबहुउभयांतो ॥ यतिचापतिजासास
॥ मयातों ॥ ४१ ॥ नवेशावेगेहोंलवदिसतसेद्वारदि
॥ घले ॥ उभाराहेशब्देकरनिमहिलचित्तदि
॥ घले ॥ असेजालादारारमणहरियाकायक
॥ रणो ॥ मलारेसेजालेदितसखयाजाजि
॥ मरणो ॥ रणो ॥ तदुपरिमगतेकुमदेश्वरी ॥ पर

॥ विकृष्ण होउ नितेष्टा गे ॥ उठत से भगवे ॥
॥ रिच्या वरि ॥ वसन कचुकी कुंतल सावरि ॥ ४
॥ निट किठउ नियां करप कंजा ॥ हुणत रे भदन
॥ मज अन्यजा ॥ छाक्षये केल लुण बिघड लें असे ॥
॥ पुढील सकंट हुनिर से कसे ॥ श्वा ॥ हुणमाते जा ॥
॥ ब्रह्म शरण विनये आजितु जला ॥ आशाधा आजा ॥
॥ बहिसिद्ध यहु दिव्य मजला ॥ नुपेष्टा हे भासी
॥ नकरि आनु जपा ॥ रो ॥ करु नीदे वेशा सा ॥
॥ उकरि नया नं प ॥ जागी विराली बुढ़ा ॥
॥ सारसाई ॥ तो ॥ अंतरी सारसाई ॥ हे
॥ तां लघु तो उववर ॥ ॥ हेकाय आरक्षा ॥
॥ जाधोहु ज्याला ॥ तरी दुमुख युवराप ॥
॥ दबी ॥ तो काय हो पुर्वत नुन दानी ॥ यानिष्ठा ॥
॥ याजा एनीयां सनाते ॥ आर्घति से श्री मधुसुद
॥ नाते ॥ ब्रह्म रथा हुणे हरिस थोर जान श्रीजाला ॥
॥ द्वारीं क्षतंत समरो मन कांत आला ॥ हाका द्वि ॥
॥ नो उच्च द्वारहुणे निमाने ॥ हेकाय हो श्रवण
॥ होतन से तुहुआ दो ॥ श्वा जाल उसी रप नियेइ
॥ लकारता जा ॥ हुगुंत सीभ्रम जो विरसे परागा ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com